



कारक

Presented By:

**Smt. Sarita Srivastava
(HINDI TEACHER, VKV ROING)**



परिभाषा (Definition)

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका सीधा संबंध क्रिया के साथ ज्ञात हो, कारक कहलाता है ।

जैसे - गीता ने दूध पीया ।



इस वाक्य में गीता क्रिया का कर्ता है और दूध उसका कर्म ।

अतः 'गीता' कर्ता कारक है और 'दूध' कर्म कारक ।



कारक विभक्ति-

संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के बाद 'ने, को, से, के लिए', आदि
जो चिह्न कारक विभक्ति कहलाते हैं।



हिन्दी में आठ कारक होते हैं ।

उन्हें विभक्ति चिह्नों सहित देखा जा सकता है ।



कारक विभक्ति चिह्न (परसर्ग)

- | | |
|-------------------------------|-----------------------|
| 1. कर्ता -ने | 5. अपादान -से (पृथक्) |
| 2. कर्म -को | 6. संबंध -का, के, की |
| 3. करण -से, के साथ, के द्वारा | 7. अधिकरण -में, पर |
| 4. संप्रदान -के लिए, को | 8. संबोधन -हे! हरे! |



विशेष-

कर्ता से अधिकरण तक विभक्ति चिह्न (परसर्ग)
शब्दों के अंत में लगाए जाते हैं, किन्तु संबोधन कारक के चिह्न -

हे, रे, आदि प्रायः शब्द से पूर्व लगाए जाते हैं।



कारक के प्रकार

Types of Preposition



1. कर्ता कारक

जिस रूप से क्रिया (कार्य) के करने वाले का बोध होता है वह कर्ता कारक कहलाता है।

इसका विभक्ति-चिह्न 'ने' है।



विशेष

- (1) भूतकाल में अकर्मक क्रिया के कर्ता के साथ भी ने चिह्न नहीं लगता है।
- (2) वर्तमान व भविष्य की सकर्मक क्रिया के कर्ता के साथ ने चिह्न का प्रयोग नहीं होता है।
- (3) कभी-कभी कर्ता के साथ को तथा स का प्रयोग भी किया जाता है।



2. कर्म कारक

क्रिया के कार्य का फल जिस पर पड़ता है, वह कर्म कारक कहलाता है।

इसका विभक्ति-चिह्न 'को' है।

यह चिह्न भी बहुत - से स्थानों पर नहीं लगता।



3. करण कारक

संज्ञा आदि शब्दों के जिस रूप से क्रिया के करने के साधन का बोध हो वह करण कारक कहलाता है।

इसके विभक्ति-चिह्न 'से', 'के द्वारा' हैं।



4. संप्रदान कारक

संप्रदान का अर्थ है- देना। अर्थात्, कर्ता जिसके लिए कुछ कार्य करता है, उस रूप को संप्रदान कारक कहते हैं।

इसके विभिन्न चिह्न 'के लिए' को हैं।



5. अपादान कारक

संज्ञा के जिस रूप से एक वस्तु का दूसरी से अलग होना पाया जाए वह अपादान कारक कहलाता है।

इसका विभक्ति – चिह्न 'से' है।



6. संबंध कारक

शब्द के जिस रूप से किसी एक वस्तु का दूसरी वस्तु से संबंध प्रकट हो , वह संबंध कारक कहलाता है।

इसका विभक्ति चिह्न 'का', 'के', 'की', 'रा', 'रे', 'री' है।



7. अधिकरण कारक

शब्द के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध होता है उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

उसे विभक्ति-चिह्न 'में', 'पर' हैं।



8. संबोधन कारक

जिससे किसी को बुलाने अथवा सचेत करने का भाव प्रकट हो उसे संबोधन कारक कहते हैं ।

संबोधन चिह्न (!) लगाया जाता है ।



अभ्यास कार्य

Q III निम्नलिखित वाक्यों में आए कारक का नाम लिखिए।

1 रोहित को विद्यालय जाना है।

2 गंगा हिमालय से निकलती है।

3 बालक चम्मच से खाना खा रहा है।

4 पिताजी कमरे में हैं।

5 हे गरुजनों! कृपया आसन ग्रहण कीजिए।

6 माँ ने खाना बनाया।

7 मैं भाई के लिए उपहार लाया हूँ।



निम्नलिखित कारकों की विभक्तियाँ लिखिए।

कारक	विभक्ति
कर्म कारक	
अपादान कारक	
संबोधन कारक	
अधिकरण कारक	

कारक	विभक्ति
संबंध कारक	
करण कारक	
संप्रदान कारक	
कर्ता कारक	



Q V निम्नलिखित वाक्यों में कारक संबंधी अशुद्धियाँ हो गई हैं। उन्हें शुद्ध करके लिखिए।

1 माती जी के तबीयत ठीक नहीं है।

2 गिलास मेज़ में रखा है।

3 अच्छा भोजन शरीर को आवश्यक है।

4 पेड़ में पत्ते गिर रहे हैं।

5 पिताजी ने राकेश बुलाया है।



धन्यवाद